IJAER/March-April 2013/Volume-2/Issue-2 ISSN: 2278-9677
International Journal of Arts & Education Research

अष्टावक्र के विचार में भाषा में क्रान्तिवाद

आशीष सेमवाल[1]ए डा0 डी0 एन0 सिंह[2]
[1]शोधार्थीए दर्षन शास्त्र विभागए सी0एम0जे0विष्वविद्यालयए रायभोई, जोरबाटए मेघालय
[2]शोध निर्देषकए दर्षन शास्त्र विभाग सी0एम0जे0विष्वविद्यालय रायभोई, जोरबाट, मेघालय

काव्य की विधा क्रान्तिवाद है। द्वितीय सर्ग में, महाकवि सम्यक क्रान्ति को परिभाषित करते हुएकहते हैं कि ऐसी क्रान्ति मात्र विचारों में परिवर्तन से समुदभूतहो सकती है।अष्टावक्र कहोल से वार्तालाप करते हुएकहते हैं कि **'ऊँ शान्ति'** वृद्धों के लिए समुचित पुरातन उद्घोषणा है औरअद्यतन युवा वर्ग हेतु **'ऊँ क्रान्ति'** की नूतन उद्घोषणा होनी चाहिए। ऊँ शान्ति मन्त्र की पंक्तियों के आधार पर, सर्वत्र क्रान्ति का षंखनाद करने हेतु महाकवि अष्टावक्र के माध्यम से नवीन मन्त्र प्रस्तुत करते हैं

द्यौः क्रान्तिः नभः क्रान्तिः भाग्यभूमाभूमि क्रान्तिः।
प्रमपावन आपः क्रान्तिः ओषधिः संक्रान्तिमय हो।
नववनस्पतिवृन्द क्रान्तिः विश्वदेवस्पन्द क्रान्तिः।
महाकाव्यच्छन्द क्रान्तिः बह्म ाव संक्रान्तिमय हो।

स्वर्गलोक में क्रान्ति, आकाश में क्रान्ति, भाग्य समृद्ध भूमि परक्रान्ति, परमपावन जल राशियों में क्रान्ति एवं समस्त औषधियों में क्रान्ति हो! नवीनवनस्पतिया के समूहों में क्रान्ति, विश्व के समस्त देवों के कार्य– कलापों में क्रान्ति, महाकाव्य के छन्दों में क्रान्ति एवं बह्मसे प्रादुर्भूत समस्त विश्व में क्रान्ति हो। हिन्दी के विद्वान श्री बी0एन0 मिश्र के अनुसार शास्त्रीय परम्परा में महाकाव्यों के सर्गों के नाम श,ष, स और ह अक्षरों से प्रारम्भ नहीं किए जाते।उनका मत है कि यहाँ महाकवि ने सभी सर्गों के नाम स से प्रारम्भ करके शास्त्रीय लीक से हटकर नवीन पथ का निमार्प किया है।

अष्टावक्र शब्द के अर्थ–

महाकाव्य में कवि अष्टावक्र नाम की व्युत्पत्ति अष्ट अर्थात आठ और अवक्र अर्थात टेढ़ेपन से रहित अथवा सीधे शब्दों की सन्धि से करते हैं।इस सन्धि विच्छेदके आधार पर अष्टावक्र शब्द की पाँच व्याख्याएँ पद्यों में प्रस्तुत की गई हैं–

1.वह, जिनके लिए आठ प्रतिपंच तत्व (पृथ्वी,जल अग्नि,वायु एवं आकाश), मन, बुद्धि एवं अहंकार सदैव अवक्र (अकुपित) रहेंगे और उनका दुःख हरते रहेंगे॥

2 वह, जिन्हें आठ कुभोग (ऐन्द्रिय आनन्दों के स्रोत)
तथा आठ प्रकार के मैथुन वक्र (विकारग्रस्त एवं विचलित) नहीं कर सकेंगे।

3. वह, जिन्हें आठों लोकपाल इन्द्र, अग्नि, यम, सूर्य, वरुण, वायु, कुबेर एवं चन्द्र दृभी वक्र (विकृत) करने में सक्षम नहीं हो सकेगें।

4. वह, जिनके लिए आठों वसु कदापि अवक्र (अप्रिय) नहीं होंगे।

5.वह, जिनकी अवक्र (अनिन्दित) कीर्ति का गान आठों नागों द्वारा दिवस के आठों याम (तीन घंटे की समयावधि) किया जाता रहेगा।

दर्शन का अर्थ–

महाकाव्य में दर्शनसे सम्बन्धित पद्य अनेकस्थलों पर द्रष्टव्य हैं। तृतीय सर्ग में अष्टावक्र के स्वगत कथन में वेदान्त की विशिष्टा द्वैत शाखा के अनुसार आत्मा के स्वभाव का निरूपण करने वाले पद्य प्राप्त होते हैं।छठे सर्ग के अन्तर्गत उद्दालक द्वारा अष्टावक्र को प्रदत्त उपदेश का एक भाग इसी विषय का प्रतिपादन करता है।इन ष्लोकों में प्रयुक्त शब्दावली वेद्र उपनिषद एवं श्रीमद्भगवद्गीता में प्रयुक्त

शब्दावली के समान ही है। साधना की व्याख्या में प्रस्तुत एक रूपक हिन्दू दर्शनकी सभी छहों आस्तिक शाखाओं सांख्य, योग, वैशेषिक, न्याय, मीमांसा एवं वेदान्त का सम्मिश्रण प्रस्तुत करता है।

सप्तम सर्ग में जब अष्टावक्र मिथिला में प्रवेश करते हैं, वे समस्त षड्दर्शनों के विद्वानों को वहाँ पाते हैं। वेदान्त दर्शनकी अनेकप्रशाखाएँ भी सात वींशाखा भक्ति सहित वर्णित हैं। पद्य हिन्दू दर्शन में विश्व की उत्पत्ति के सम्बन्ध में विभिन्न विचारधाराओं का वर्णन करता है– कुछ इसे शब्द से निर्मित मानते हैं तो कुछ कहते हैं कि यह या तो परिणाम है अथवा विवर्त है। कवि प्रथम अवधारणा (परिणाम) को स्वीकार करते हैं।

समाजिकता का सन्देष–

महाकाव्य के अनेक सन्दर्भों में, भारत एवं विश्व से सम्बन्धित विभिन्न समकालीन सामाजिक समस्याओं पर प्रकाश डाला गया है। समस्याओं को महाकाव्य में पात्रों के स्वगत कथन अथवा उनके मध्य संवादों के माध्यम से प्रस्तुत किया गया है। इन समस्याओं में कन्याओं के विरुद्ध पक्षपात, आरक्षण एवं योग्यता, विकलांगों की दशा आदि अनेक मुद्दशामिल हैं।

कन्याओं के प्रति भेदभाव–

अनेक सांस्कृतिक एवं आर्थिक कारणों से, भारतीय समाज में कन्याएँ ऐतिहासिक रूप से भेदभाव का शिकार रही हैं। पुत्रों के लिए प्राथमिकता और कन्या– शिशुओं के प्रति पक्षपात आज भी जारी है, जो कि बाल लिंग अनुपात (कन्या भ्रूणहत्या तथा लिंग आधारित गर्भपात द्वारा असंतुलित) और स्त्रियों में अल्प साक्षरता दर के आंकड़ों से प्रत्यक्ष परिलक्षित होता है। कवि लिंग असमानता की समस्या को महाकाव्य के प्रथम तथा पंचम सर्ग में उठाते हैं। उद्दालक और कहोल के संवाद के सन्दर्भ में प्रथम सर्ग से निम्न पद्य उद्धृत है, जिसमें उद्दालक कहोल को सुजाता के जन्म की सूचना देते हुए कहते हैं–

कन्या नहीं भार है शिरका यही सृष्टि का है श्रृंगार
मानवता का यही मन्त्र है यही प्रकृति का है
उपहार।
कोख पवित्र सुता से होती पुत्री से गृह होता शुद्ध
नहीं रूणहत्या विधेय है श्रुतिविरुद्ध यह कृत्य अशुद्ध

आरक्षण का सम्पादन–

शिक्षण संस्थानों एवं सामाजिक क्षेत्र में आरक्षण और इसका निजी क्षत्रे हेतु प्रस्ताव भारत में एक विवादास्पद तथा अत्यन्त चर्चित मुद्दा ह। हालही में, विभिन्न जाति आरै धार्मिक समूहों ने शिक्षण संस्थानों एवं अथवा सामाजिक क्षत्रे में आरक्षण की मांग की है, जिससे अधिका श ंातः असंतोष, विराधे एवं न्यायपालिका आरै विधानसभा के मध्य विवाद ही उभरकर सम्मुख आए है। महाकाव्य के पांचवें सर्ग में पद्य में, उद्दालक विकलागं अष्टावक्र की सीखने की क्षमताओं का श्वते केतु एवं अन्य शिष्यों की क्षमताओं से तुलना करत हुए, स्वयं से ही वार्तालाप करते हएु कहते हैं—

प्रातिभ क्षत्रे में आरक्षण
न कदापि राष्ट्रहित में
समुचित। यह घोर निरादर
प्रतिभा का अवनति का पथ
अतिशय अनुचित।

विकलागांों के प्रति भेदभावपूर्ण दृष्टिकोण–

महा काव्य चतुर्विध विकलांगों से सम्बन्धित अनेक सामाजिक समस्याओं को उठाता है और उनकी मनोदशाओं का भी विश्लेषण करता है। विकलांगों के प्रति पक्षपात एवं भेदभाव के मुद्दे को महाकाव्य में अनेकसन्दर्भों में उठाया गया है।प्रथम सर्ग में, उद्दालक एवं कहोल के मध्य संवाद में, उद्दालक कहते हैं कि अष्टावक्र की सफलता के पश्चात, विकलांगों को समाज द्वारा उनके अधिकारों से अब वंचित नहीं किया जाएगा। उनसे अब और अधिक अनु चित लाभ नहीं उठाया जाएगा, वे शुभ संस्कारों पर अपशकुन नहीं समझे जाएंगे और उनके साथ समानता का व्यवहार किया जाएगा। चतुर्थ सर्ग में, सुजाता से वार्तालाप करते हुएउद्दालक कहते हैं कि यह धारणा कि विकलांग परिवार पर भार हैं और उपेक्षणीय हैं दृविश्व का सर्वनाष कर देगी।

वे विकलांगों के अपमान एवं तिरस्कार के विरुद्ध चेतावनी देते हुए उनके साथ सम्मान जनक व्यवहार करने का परामर्श देते हैं, अन्यथा विकलांगों के अश्रु बिन्दु उन्हें पीड़ितकरने वालों को वज्र के समान बन कर दण्डित कर सकते हैं।सप्तम सर्ग में, अष्टावक्र के स्वगत कथन में, कवि कहते हैं कि विकलागों को हास्य का पात्र बनाना कदापि समीचीन नहीं है, क्योंकि वे भी उसी शिल्पी की कृति हैं, जिसने सम्पूर्ण सृष्टि का सृजन किया है। एक पद्य उदाहरण के रूप में प्रस्तुतहै–

भार है विकलागं क्या परिवार का
क्या उपेक्ष्या पात्र वह सकलागंका।
जगत को जर्जरित कर देगी झटिति
यह विषम अवधारणा कुसमाज की।।

अष्टावक्र गीता में काव्यगत विशेषतायें–

रस सम्बन्धी विषेषतायें–

महाकाव्य के प्रधान रसवीर एवं करुण रस हैंअपने पिता के शाप के पश्चात अष्टावक्र का स्वगत कथन (तृतीयसर्ग), कहोल का शाप देने के उपरान्त पश्चाताप(चतुर्थसर्ग) तथा कहोल को जल में डुबो दिए जाने के पश्चात उद्दालक एवं सुजाता के मध्य वार्तालाप दया एवं करुणा से ओत–प्रोत प्रसंग हैं। अष्टावक्र का अपने पिता को मुक्त कराने का दृढ निश्चय औरसंकल्प (पांचवां सर्ग) और उनकी मिथिला यात्रा (छठासर्ग) वीर रस से परिपूर्ण उल्लेखनीय प्रसंग हैं।

अलंकार सम्बन्धी विषेषतायें–

अनुप्रास एवं यमक सम्बन्धी विषेषतायें–

यमक संस्कृत में (हिन्दी तथा अन्य प्राकृत भाशाओं में भी) एक ऐसा अलंकार है, जहाँ एक शब्द अनेकबार प्रयुक्तहोता है औरप्रत्येक बार उस शब्द का अर्थ भिन्न होता है।महाकाव्य में यमक मिश्रित अनुप्रास अंलकार का एक उदाहरण पद्य के द्वितीय अर्धांष में इस प्रकार है–

अंग अंग पर विलस रहे थे ललितललाम
विभूषण भव भूषण दूषण रिपूदूशण दूषण
निमिकुलभूशण।

राजा जनक के प्रत्येकअंगपर सुन्दर आभूषण जगमगा रहे थे।वे संसार के आभूषण थे, दूषण (खर राक्षस का भाई) के शत्रु राम के विरुद्ध समस्त दूषणों (तर्कों) का दूषण (नाश) करने वाले थे और राजा निमि के वंशको विभूषित कर रहे थे।पद्यांष के द्वितीय अर्धांष में, कवि' रौरव' एवं 'गौरव' शब्दो का प्रयोग

एक ही पंक्ति मे क्रमशः चार और तीन बार करते हैं, जिनमें प्रत्येक बार उनका भिन्न–भिन्न अर्थ है–

रौरव सहित रहित रौरव से रौरव कृत जित रौरव थे
गौरवमय अभिमान विवर्जित श्रित गौरव हित गौरव थे।

वे (महर्षि कहोल) मृग का चर्म (का वस्त्र) धारण किए हुए थे, अनीति (रौरव) से मुक्तथे, स्तुतियों (रौरव) के रचयिता थे और रौरव नामक नरक को जीतने वाले थे। वे स्वाभिमान से युक्त थे, अभिमान से रहित थे, गुरुके आश्रित थे और (दूसरों की) श्रद्धा को धारण करने वाले थे।

भाषा समक सम्बन्धी विषेषतायें–

महाकाव्य में अनेक स्थलों पर कवि भाषा–समक (मणिप्रवाल) अलंकार का प्रयोग करते हैं, जहाँ संस्कृत तथा हिन्दी एक साथ मिश्रित हो गई हैं।इस प्रकार के पद्य का एक उदाहरण, जिसमें निरुक्त के आधार पर सुजाता नाम की व्युत्पत्ति की गई है, यहाँ प्रस्तुत है–

सुभगो जातो यस्याः सैव सुजाता नाम
निरुक्ति यही अष्टावक्र सुभग जातक की
बनी सुजाता मातु सही।।

सुजाता शब्द की व्युत्पत्तिपरक व्याख्या है कि जिसका पुत्र भाग्यवान है। वस्तुतः, सुजाता सौभाग्यशाली पुत्र अष्टावक्र की उपयुक्तमाता बन गई।

मुद्रा सम्बन्धी विषेषतायें–

मुद्रा अलंकार के अन्तर्गत, पद्य रचना के लिए प्रयुक्तछनद का– उसके नाम का पद्य में उल्लेखकर–संकेत किया जाता है। अष्टावक्र गीता के तृतीय सर्ग का अन्तिम पद्य **'शार्दूलविक्रीडित'** छनद (संस्कृत महाकाव्यों में बहुधा प्रयुक्त एक छन्द) में रचित है और इसमें 'शार्दूलविक्रीडित' शब्द का प्रयोग किया गया है–

अष्टावक्र महर्षि वाक्य कह रहे ज्यों हो रहे मौन थे
त्यों ही बिप्र कहोल के नयन भी नीरन्ध्रवर्षी बनें।
सीमन्तोन्नयनीय वेदविधि भी सम्पन्न प्रायः हुई
गाएँ देव सभी कहोलसुत का शार्दूलविक्रीडितम्।।

अपने संस्कृत महाकाव्य श्रीभार्गवराघवीयम् में, कवि रामभद्राचार्य ने इस अलंकार का आठ स्थानों पर प्रयोग किया है।

मिथिला में वाद–विवाद–

महाकाव्य के सातवें और आठवें सर्ग में चार वार्तालाप वर्णितहैं।इनमें प्रथम वार्तालाप अष्टावक्र एवं राजा जनक के मध्य होता है औरअष्टावक्र के तेज एवं आत्मविश्वास को प्रस्तुत करता है। शेष तीन वार्तालापों में अष्टावक्र की विद्वता को प्रमाणित करने वाले वाद–विवाद सम्मिलित हैं ,जिनमें प्रथम द्वारपाल को सन्तुष्ट कर सभा में प्रवेश करने की अनुमति प्राप्त करने हेतु, द्वितीय राजा जनक के गूढ़ प्रश्नों के उत्तर के रूप में और तृतीय बन्दी तथा अष्टावक्र के मध्य शास्त्रार्थ के रूप में होता है, जिसमें अत्यन्त साधारण प्रतीत होने वाली संख्या एक से तेरह तक की गणनाएँ स्वयं में अन्त र्निहित रहस्यों और गुप्त अर्थों को झुठलाती हैं। महाकाव्य के ये वार्ताला प महाभारत के समान ही हैं। महाभारत के संस्कृत काव्य तथा अष्टावक्र के हिन्दी काव्य में वर्णित इन वार्ताला पों की परस्पर तुलना उल्लेखनीय है।

सन्दर्भग्रन्

थ1–पातंजल योगप्रदीप (समाधिपाद),1/15
2–नैषधीयचरितम्: प्रथमसर्ग
3–पातंजल योग प्रदीप (समाधिपाद),1/18
4–श्री अरविन्द के योगका एकमात्र
उददेष्यः अगस्त–19345.
5–अष्टावक्र गीता,18/71
6–परिव्राजक सन्यासी पुस्तक विवेकानन्द केन्द्र प्रकाशन टस्ट–5 सिन्गराचारी स्ट्रीट–5 ट्रिप्लिकेन क्षेत्र 60005